http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 5, 66-67

Article ID:591

भारत में डेयरी विकास और देशी नस्लों के संरक्षण की रणनीतियाँ एवं नीतियाँ

कविता खोसला चैटली[1], धीरेंद्र भोंसले[1], रंजना सिन्हा[2], निष्मा सिंह[1], रूपल पाठक[1]

[1]पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, अंजोरा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

[2]बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, पटना

*अनुरूपी लेखक

कविता खोसला चैटली

भारत विश्व में दूध उत्पादन में प्रथम स्थान पर है और वैश्विक दूध उत्पादन में 23% की भागीदारी रखता है। 2021-22 में कुल दूध उत्पादन 221.06 मिलियन टन रहा जो 2014-15 की तुलना में 51.05% अधिक है। प्रति व्यक्ति दूध उपलब्धता 485 ग्राम प्रतिदिन है जो विश्व औसत 394 ग्राम से अधिक है। डेयरी क्षेत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में 5% योगदान देता है और 8 करोड़ से अधिक किसानों को प्रत्यक्ष रोज़गार देता है। परंतु देशी नस्लों की संख्या में निरंतर गिरावट चिंताजनक है। 2019 की पशुगणना के अनुसार कुल गोवंश 193.46 मिलियन है जिसमें देशी/अवर्णित नस्लें 142.11 मिलियन हैं। पिछली जनगणना की तुलना में देशी नस्लों की संख्या में 6% की कमी आई है।

देशी नस्लों के संरक्षण की आवश्यकता

देशी नस्लें उष्णकटिबंधीय जलवायु की कठिन परिस्थितियों के लिए अत्यंत अनुकूल होती हैं। इनकी प्रमुख विशेषताएँ:

- गर्मी और सूखे को सहन करने की अद्भुत क्षमता
- टिक-जनित बीमारियों के प्रति प्राकृतिक प्रतिरोधक क्षमता
- कम गुणवत्ता वाले चारे पर भी जीवित रहने की क्षमता
- जैविक एवं प्राकृतिक कृषि में महत्वपूर्ण योगदान

पंजाब जैसे उन्नत राज्यों में देशी गाय की आबादी लगभग शून्य स्तर पर पहुँच रही है, जो भविष्य के लिए गंभीर खतरे का संकेत है।

प्रमुख सरकारी योजनाएँ

राष्ट्रीय गोकुल मिशन (RGM): दिसंबर 2014 से लागू यह मिशन देशी नस्लों के विकास एवं संरक्षण के लिए समर्पित है। 2021–2026 तक इसका बजट ₹2400 करोड़ है। मिशन के अंतर्गत:

- उच्च आनुवंशिक गुणवत्ता वाले साँड़ों का उत्पादन एवं प्रचार
- कृत्रिम गर्भाधान नेटवर्क का विस्तार
- इन विट्रो फर्टिलाइजेशन (IVF) तकनीक का उपयोग
- गोशालाओं एवं गोसदनों को सहायता

राष्ट्रीय पशुधन मिशन (NLM): इस मिशन के तीन उप-मिशन हैं – नस्ल विकास, चारा एवं पशु आहार विकास, तथा अनुसंधान एवं नवाचार। इसका उद्देश्य उद्यमिता विकास, उत्पादकता वृद्धि एवं चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना है।

राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (NADCP): प्रधानमंत्री द्वारा 2019 में शुरू इस योजना के तहत ₹13,343 करोड़ की लागत से खुरपका-मुँहपका रोग (FMD) और ब्रूसेलोसिस का नियंत्रण किया जा रहा है। 2025 तक FMD पर नियंत्रण और 2030 तक पूर्ण उन्मूलन का लक्ष्य है।

किसान क्रेडिट कार्ड (KCC): डेयरी किसानों को 7% ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध है जिसमें 3% की ब्याज छूट मिलती है। समय पर चुकाने पर प्रभावी ब्याज दर केवल 4% रहती है।

देशी नस्लों के संरक्षण की उन्नत तकनीकें

- चयनात्मक प्रजनन: साहिवाल, थारपारकर, गिर, हरियाणा जैसी श्रेष्ठ नस्लों के साँड़ों से ग्रेडिंग अप
- कृत्रिम गर्भाधान (AI): 65 वर्षों से उपयोग में, आज भी सबसे प्रभावी तकनीक
- बहुभ्रूण अंडाणु स्थानांतरण (MOET): एक बार में अनेक बछड़े प्राप्त करने की तकनीक
- IVF और OPU तकनीक: एक श्रेष्ठ दाता गाय से वर्ष में 10–25 बछड़े प्राप्त करना संभव
- जीनोमिक चयन: SNP जीनोटाइप के आधार पर अनुमानित प्रजनन मूल्य की गणना

निष्कर्ष

देशी नस्लों का संरक्षण केवल परंपरा नहीं, बल्कि जलवायु परिवर्तन के युग में एक अनिवार्य आवश्यकता है। गोशालाएँ इन-सिटू संरक्षण केंद्रों के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। आधुनिक प्रजनन तकनीकों, सरकारी योजनाओं और किसानों की भागीदारी के संयुक्त प्रयास से देशी नस्लों का संरक्षण एवं उनकी उत्पादकता वृद्धि दोनों साथ-साथ संभव हैं।